संस्कृत प्रतिष्ठा (प्रथम खंड)
प्रथम पत्र

1. किस पक्षी के शोक से संतप्त होकर वाल्मीकि की काव्य–प्रतिभा उत्पन्न हुई ?
   (क) सारस (ख) पिक (ग) शुक (घ) क्रौंच
2. रामायण में कितने श्लोक हैं ?
   (क) 10000 (ख) 24000 (ग) 25000 (घ) 51000
3. राम के राजतिलक तथा वनवास का वर्णन किस काण्ड में है–
   (क) उत्तरकाण्ड (ख) लङ्काकाण्ड (ग)अयोध्याकाण्ड (घ) बालकाण्ड
4. हनुमान् द्वारा अशोकवाटिका का वर्णन किस काण्ड में है ?
   (क) सुन्दरकाण्ड (ख) अरण्यकाण्ड (ग) उत्तरकाण्ड (घ) लङ्काकाण्ड
5. रामायण में कितने काण्ड हैं ?
   (क) पाँच (ख) सात (ग) चौबीस (घ) ग्यारह
6. लव–कुश का जन्म किस काण्ड में वर्णित है ?
   (क) बालकाण्ड (ख) अयोध्याकाण्ड (ग) उत्तरकाण्ड (घ) लङ्काकाण्ड
7. रामायण के रचयिता कौन है ?
   (क) तुलसीदास (ख) वाल्मीकि (ग) रामदास (घ) वेदव्यास
8. इण्डोनेशिया में रामायण किस रूप में प्रचलित है ?
   (क) रामायणम् (ख) रामचरितम्
   (ग) रामायण काकविन (घ) रामायण सार
9. श्रीलङ्का में प्रचलित रामायण की भाषा है–
   (क) तमिल (ख) सिंहली (ग) मलयालम (घ) संस्कृत
10. इनमें से कौन–सा ग्रन्थ रामायण के आधार पर लिखा गया है ?
    (क) किरातार्जुनीयम् (ख) शिशुपालवधम्
    (ग) बालभारतम् (घ) प्रसन्नराघव
11. रामायण वर्णन है–
    (क) सर्गों में (ख) पर्वों में (ग) काण्डों में (घ) अङ्कों में
12. रामायण में अङ्गीरस है–
    (क) करूण (ख) शृङ्गार (ग) शान्त (घ) वीर
13. रामायण को कहा जाता है–
    (क) गद्यकाव्य (ख) चम्पूकाव्य (ग) आदिकाव्य (घ) प्रबन्धकाव्य
14. इनमें से कौन काव्य रामायण पर आश्रित नहीं है ?
    (क) रघुवंश (ख) भट्टिकाव्य (ग) सेतुबन्ध (घ) बुद्धचरितम्
15. वाल्मीकि का पूर्व में क्या नाम था ?
    (क) गङ्गाधर (ख) रत्नाकर (ग) रामदास (घ) तुलसीदास
16. महाभारत के रचयिता हैं–
    (क) कालिदास (ख) तुलसीदास (ग) कृष्णद्वैपायन (घ) भास

17. महाभारत में कितने श्लोक हैं ?
(क) पच्चीस हजार (ख) पचास हजार
(ग) इक्कीस हजार (घ) एक लाख
18. महाभारत की कथा वर्णित है–
(क) अङ्कों में (ख) सर्गों में (ग) पर्वों में (घ) काण्डों में
19. महाभारत की कथा विभाजित है–
(क) 18 पर्वों में (ख) 7 पर्वों में
(ग) 15 पर्वों में (घ) 19 पर्वों में
20. विश्व–साहित्य का सबसे बड़ा काव्य है–
(क) रामायण (ख) महाभारत (ग) किरातार्जुनीयम् (घ) रघुवंशम्
21. 'शतसाहस्री संहिता' किसे कहते हैं–
(क) रामायण को (ख) रघुवंश को
(ग) भगवद्गीता को (घ) महाभारत को
22. द्रौपदी–स्वयंवर किस पर्व में वर्णित है–
(क) सभापर्व (ख) भीष्मपर्व (ग) खिलपर्व (घ) आदिपर्व
23. राजनीतिविज्ञान किस पर्व में दिया गया है–
(क) अनुशासनपर्व (ख) भीष्मपर्व (ग) कर्णपर्व (घ) स्त्रीपर्व
24. विदुरनीति का वर्णन किस पर्व में आता है–
(क) भीष्मपर्व (ख) आदिपर्व (ग) उद्योग पर्व (घ) वनपर्व
25. महाभारत में अङ्गीरस है–
(क) शृङ्गार (ख) वीर (ग) शान्त (घ) अद्भुत
26. महाभारत पर आधारित कालिदास का ग्रन्थ है–
(क) मेघदूतम् (ख) रघुवंशम्
(ग) विक्रमोर्वशीयम् (घ) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
27. मौसल पर्व का उल्लेख है–
(क) रामायण में (ख) महाभारत में
(ग) भगवद्गीता में (घ) रघुवंश में
28. पाण्डवों का वनवास कितने वर्षों का था–
(क) 14 वर्षों का (ख) 12 वर्षों का
(ग) 13 वर्षों का (घ) 11 वर्षों का
29. श्रीमद्भगवद्गीता के रचयिता हैं–
(क) श्रीकृष्ण (ख) भीष्म (ग) व्यास (घ) कालिदास
30. गीता महाभारत के किस पर्व से सम्बन्धित है–
(क) भीष्मपर्व (ख) शान्तिपर्व (ग) वनपर्व (घ) सभापर्व
31. गीता में कितने अध्याय हैं–
(क) 17 (ख) 18 (ग) 19 (घ) 20
32. गीता में कितने श्लोक हैं–
(क) 400 (ख) 500 (ग) 600 (घ) 700

33. गीता में श्रीकृष्ण ने किसे उपदेश दिया है–
(क) विदुर को (ख) अर्जुन को (ग) भीम को (घ) कर्ण को
34. 'कर्मण्येवाधिकारस्ते' गीता के किस अध्याय में है–
(क) प्रथम (ख) द्वितीय (ग) तृतीय (घ) चतुर्थ
35. 'न जायते म्रियते वा' गीता के किस अध्याय में है–
(क) प चम (ख) चतुर्थ (ग) तृतीय (घ) द्वितीय
36. नल–दमयन्ती–कथा का वर्णन किस पर्व में है–
(क) वनपर्व (ख) स्त्रीपर्व (ग) शान्तिपर्व (घ) आदिपर्व
37. पुराणों के रचयिता किसे माना जाता है–
(क) वाल्मीकि (ख) कालिदास (ग) वेदव्यास (घ) श्रीहर्ष
38. पुराणों की संख्या है–
(क) 4 (ख) 8 (ग) 12 (घ) 18
39. 'शकुन्तलोपाख्यान' किस पुराण में उपलब्ध होता है–
(क) नारदपुराण (ख) विष्णुपुराण (ग) पद्मपुराण (घ) अग्निपुराण
40. देवी दुर्गा की उत्पत्ति किस पुराण में वर्णित है–
(क) मार्कण्डेयपुराण (ख) देवीपुराण
(ग) भागवतपुराण (घ) स्कन्दपुराण
41. काव्यशास्त्र सम्बन्धी ज्ञान किस पुराण में है–
(क) भविष्यपुराण (ख) अग्निपुराण
(ग) मत्स्यपुराण (घ) वामनपुराण
42. 'नचिकेतोपाख्यान' किस पुराण में मिलता है–
(क) मार्कण्डेय (ख) ब्रह्माण्ड (ग) भविष्य (घ) वाराह
43. उपपुराणों की संख्या है–
(क) 12 (ख) 18 (ग) 20 (घ) 24
44. व्यास की माता का क्या नाम था–
(क) सत्यवती (ख) कुन्ती (ग) अम्बिका (घ) पार्वती
45. मेघदूत किसकी रचना है–
(क) श्रीहर्ष (ख) माघ (ग) भारवि (घ) कालिदास
46. विद्योत्तमावृत्त का सम्बन्ध किस कवि से है–
(क) व्यास (ख) भास (ग) कालिदास (घ) भारवि
47. 'रघुवंशम्' किसकी रचना है–
(क) भर्तृहरि (ख) कालिदास (ग) भास (घ) विशाखदत्त
48. रघुवंश किसमें विभक्त है–
(क) अध्यायों में (ख) काण्डों में (ग) अङ्कों में (घ) सर्गों में
49. रघुवंशम् कितने सर्गों में रचित है–
(क) 15 (ख) 17 (ग) 18 (घ) 19
50. 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये' यह किसका मङ्गलाचरण है
(क) रघुवंश (ख) कुमारसम्भव (ग) मेघदूतम् (घ) ऋतुसंहार

51. 'क्व सूर्यप्रभवो वंशः' यह पंक्ति किस ग्रंथ से है–
(क) मेघदूतम् (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) रघुवंशम् (घ) मृच्छकटिकम्
52. बृहत्त्रयी में कौन–सा महाकाव्य नहीं है–
(क) किरातार्जुनीयम् (ख) रघुवंशम्
(ग) शिशुपालवधम् (घ) नैषधीयचरितम्
53. नाटक की उत्पत्ति में संवाद सूक्त सिद्धान्त मानने वाले विद्वान् हैं–
(क) डॉ. कोनो (ख) डॉ. रिजवे
(ग) डॉ. पिशेल (घ) मैक्समूलर
54. डॉ. पिशेल नाटक की उत्पत्ति में किस सिद्धान्त को मानते हैं–
(क) छायानाटकवाद (ख) पुत्तलिकावाद (ग) वीरपूजावाद (घ) अनुकृतिवाद
55. रूपक कितने प्रकार के होते हैं–
(क) पाँच (ख) आठ (ग) नौ (घ) दस
56. महाकाव्य में न्यूनतम कितने सर्ग होने चाहिए–
(क) दस (ख) आठ (ग) तीन (घ) चार
57. बुद्धचरितम् के लेखक हैं–
(क) अश्वघोष (ख) यशोधरा (ग) महात्मा बुद्ध (घ) हर्ष
58. बुद्धचरितम् के कितने सर्ग हैं–
(क) 17 (ख) 18 (ग) 21 (घ) 28
59. सौन्दरनन्द के लेखक हैं–
(क) सुबन्धु (ख) कालिदास (ग) अश्वघोष (घ) भास
60. किरातार्जुनीयम् किस विधा का काव्य है–
(क) महाकाव्य (ख) खण्डकाण्ड (ग) गीतिकाव्य (घ) चम्पू
61. किरातार्जुनीयम् में कितने सर्ग हैं–
(क) 18 (ख) 20 (ग) 21 (घ) 24
62. किरातार्जुनीयम् किस काव्यवैशिष्ट्य के लिए प्रसिद्ध है–
(क) उपमा (ख) अर्थगौरव (ग) उत्प्रेक्षा (घ) पदलालित्य
63. किरातार्जुनीयम् में अर्जुन का किसके साथ युद्ध होता है–
(क) इन्द्र (ख) विष्णु (ग) शिव (घ) ब्रह्मा
64. शिशुपालवधम् के रचयिता हैं–
(क) रत्नाकर (ख) अश्वघोष (ग) शिशुपाल (घ) माघ
65. शिशुपालवध में किस पर्वत का वर्णन है–
(क) रैवतक (ख) हिमालय (ग) मलय (घ) द्रोण
66. उपमा–अर्थगौरव और पदलालित्य इन तीनों का एकत्र प्रयोग किस काव्य में हुआ है–
(क) किरातार्जुनयीम् (ख) शिशपालवधम् (ग) रघुवंशम् (घ) रत्नावली
67. शिशुपालवध महाकाव्य में कितने सर्ग हैं–
(क) 17 (ख) 18 (ग) 20 (घ) 16

68. शिशुपालवधम् महाकाव्य का अङ्गीरस कौन–सा है–
(क) शान्त (ख) शृंगार (ग) हास्य (घ) वीर
69. भट्टिकाव्य के लेखक हैं–
(क) भट्टि (ख) जयन्त भट्ट (ग) भारवि (घ) माघ
70. भट्टिकाव्य का अपरनाम क्या है–
(क) रामचरिम् (ख) रावणवधम् (ग) रामायणम् (घ) सीताहरणम्
71. नैषधीयचरितम् के लेखक हैं–
(क) माघ (ख) भारवि (ग) कालिदास (घ) श्रीहर्ष
72. नैषधीयचरितम् का आधार ग्रन्थ है–
(क) महाभारत (ख) रामायण (ग) रघुवंश (ग) मनुस्मृति
73. नैषधीयचरितम् में कितने सर्ग हैं–
(क) 20 (ख) 21 (ग) 22 (घ) 25
74. नैषधीयचरितम् का प्रधान रस है–
(क) करूण (ख) शृङ्गार (ग) वीर (घ) हास्य
75. किस महाकाव्य को विद्वानों के लिए औषधि कहा गया है–
(क) रघुवंशम् (ख) किरातार्जुनीयम्
(ग) नैषधीयमचरितम् (घ) हरिविजयम्
76. हरविजय महाकाव्य के रचयिता हैं–
(क) भारवि (ख) माघ (ग) श्रीहर्ष (घ) रत्नाकर
77. हरविजय महाकाव्य में सर्गों की संख्या हैं–
(क) 10 (ख) 20 (ग) 50 (घ) 25
78. जानकीहरण में के प्रणेता हैं–
(क) कुमारदास (ख) रत्नाकर (ग) भारवि (घ) माघ
79. जानकीहरण के प्रणेता हैं–
(क) 15 (ख) 20 (ग) 21 (घ) 25
80. महाकवि मङ्खक द्वारा रचित महाकाव्य है–
(क) श्रीकण्ठचरित (ख) रामचरित (ग) महावीर चरित (घ) सीताचरित
81. नेमिनिर्माण महाकाव्य के रचियता हैं–
(क) हरिश्चन्द्र (ख) मङखक (ग) श्रीकण्ठ (घ) वाग्भट्ट
82. रामायणमंजरी के रचयिता हैं–
(क) क्षेमेन्द्र (ख) अभिनन्द (ग) भवभूति (घ) दण्डी
83. विक्रमाङ्कदेवचरित के प्रणेता हैं–
(क) कल्हण (ख) विल्हण (ग) जयदेव (घ) मम्मट
84. राजतरङ्गिणी के लेखक हैं–
(क) कल्हण (ख) विल्हण (ग) दण्डी (घ) जयदेव
85. जल्हण द्वारा रचित ग्रंथ है–
(क) राजतरङ्गिणी (ख) रामायणम जरी (ग) सोमपालविजय (घ) मेघदूत
86. हरिविलास महाकाव्य के लेखक हैं–
(क) पद्मगुप्त (ख) धर्मगुप्त (ग) सोमनाथ (घ) लोलिम्बराज

87. नाट्यशास्त्र के रचयिता हैं–
(क) भरत (ख) मम्मट (ग) विश्वनाथ (घ) दण्डी
88. नाट्यशास्त्र में कितने अध्याय हैं–
(क) 30 (ख) 35 (ग) 36 (घ) 38
89. नाट्यवेद को कौन–सा वेद कहा गया है–
(क) चतुर्थ (ख) प चम (ग) तृतीय (घ) ऋग्वेद
90. संस्कृत के प्रथम नाटककार कौन हैं
(क) कालिदास (ख) भवभूति (ग) विशाखदत्त (घ) भास
91. भासरचित तेरह नाटक को प्रकाश में लाने वाले कौन थे–
(क) मैक्समूलर (ख) टी.गणपति शास्त्री
(ग) पाणिनि (घ) दण्डी
92. भासरचित नाटक किस वर्ष प्रकाश में आए–
(क) 1812 (ख) 1912 (ग) 1712 (घ) 1512
93. भास के नाटकों की संख्या है–
(क) 10 (ख) 12 (ग) 13 (घ) 15
94. स्वप्नवासवदत्तम् के प्रणेता हैं–
(क) भास (ख) व्यास (ग) कालिदास (घ) श्रीहर्ष
95. प्रतिमानाटक किसकी रचना है–
(क) भवभूति (ख) कालिदास (ग) विशाखदत्त (घ) भास
96. दूतघटोत्कच में कितने अङ्क हैं–
(क) एक (ख) दो (ग) तीन (घ) चार
97. कालिदासकृत रूपकों की संख्या है–
(क) पाँच (ख) चार (ग) तीन (घ) दो
98. मालविकाग्निमित्र के रचयिता हैं–
(क) व्यास (ख) भास (ग) कालिदास (घ) भवभूति
99. विक्रमोर्वशीय के प्रणेता हैं–
(क) भवभूति (ख) कालिदास (ग) भास (घ) दण्डी
100. अभिज्ञानशाकुन्तल किसके द्वारा रचित है–
(क) कालिदास (ख) श्रीहर्ष (ग) विशाखदत्त (घ) भवभूति
101. अभिज्ञानशाकुन्तलम् में नायक कौन हैं–
(क) चारूदत्त (ख) भीम (ग) शल्य (घ) दुष्यन्त
102. अभिज्ञानशाकुन्तलम् की नायिका है–
(क) द्रौपदी (ख) वसन्तसेना (ग) शकुन्तला (घ) शर्मिष्ठा
103. अभिज्ञानशाकुन्तल नाटक में कितने अंक हैं–
(क) 4 (ख) 5 (ग) 6 (घ) 7
104. कालिदास की रचना नहीं है–
(क) मुद्राराक्षस (ख) अभिज्ञानशाकुन्तलम्
(ग) मालविकाग्निमित्रम् (घ) विक्रमोर्वशीयम्

105. विक्रमोर्वशीयम् है–
(क) एकाङ्की (ख) नाटक (ग) त्रोटक (घ) नाटिका
106. मालविकाग्निमित्रम् नाटक में कितने अङ्क हैं–
(क) 4 (ख) 5 (ग) 6 (घ) 7
107. मेघदूत कितने खण्डों में विभक्त है–
(क) 5 (ख) 4 (ग) 3 (घ) 2
108. मृच्छकटिकम् कौन सा रूपक है–
(क) प्रकरण (ख) नाटक (ग) एकांकी (घ) प्रहसन
109. मृच्छकटिकम् के प्रणेता हैं–
(क) बाणभट्ट (ख) शूद्रक (ग) कालिदास (घ) श्रीहर्ष
110. मृच्छकटिकम् में कितने अंक हैं–
(क) 5 (ख) 7 (ग) 8 (घ) 10
111. मृच्छकटिकम् के नाम का आधार है–
(क) नायक (ख) नायिका (ग) मिट्टी की गाड़ी (घ) लेखक
112. उत्तररामचरितम् के लेखक हैं–
(क) भवभूति (ख) वाल्मीकि (ग) तुलसीदास (घ) व्यास
113. 'श्रीकण्ठ' की उपाधि किस नाटककार को मिली है–
(क) कालिदास (ख) शूद्रक (ग) माघ (घ) भवभूति
114. छाया–अङ्क किस नाटक में है–
(क) महावीरचरितम् (ख) उत्तररामचरितम्
(ग) मालतीमाधवम् (घ) वेणीसंहार
115. उत्तररामचरित का प्रधान रस है–
(क) करुण (ख) हास्य (ग) वीर (घ) भयानक
116. गर्भाङ्क किस नाटक में हैं–
(क) अभिज्ञानशाकुन्तलम् (ख) मुद्राराक्षस
(ग) उत्तररामचरितम् (घ) स्वप्नवासवदत्तम्
117. शारिपुत्रप्रकरण के लेखक हैं–
(क) मुरारि (ख) अश्वघोष (ग) भवभूति (घ) कालिदास
118. कर्पूरम जरी के लेखक हैं–
(क) दण्डी (ख) भास (ग) व्यास (घ) जयदेव
119. कर्पूरम जरी किस भाषा में है–
(क) संस्कृत (ख) प्राकृत (ग) हिन्दी (घ) अवधी
120. प्रसन्नराघव के रचयिता हैं–
(क) वत्सराज (ख) राजशेखर (ग) कृष्णमिश्र (घ) जयदेव
121. शिवराजविजय किस विधा का ग्रन्थ है–
(क) नाटक (ख) महाकाव्य (ग) खण्डकाव्य (घ) उपन्यास
122. शिवराजविजय के लेखक हैं–
(क) पं. अम्बिका दत्त व्यास (ख) भास (ग) मम्मट (घ) कालिदास

123. अवन्तिसुन्दरीकथा के लेखक हैं–
(क) बाणभट्ट (ख) दण्डी
(ग) भट्ट नारायण (घ) पं. अम्बिका दत्त व्यास
124. हर्षचरित के प्रणेता हैं–
(क) श्रीहर्ष (ख) सुबन्धु (ग) बाणभट्ट (घ) अश्वघोष
125. कादम्बरी के लेखक हैं–
(क) दण्डी (ख) सुबन्धु (ग) श्रीहर्ष (घ) बाणभट्ट
126. दशकुमारचरित के लेखक हैं–
(क) दण्डी (ख) बाणभट्ट (ग) सुबन्धु (घ) क्षेमेन्द्र
127. शुकनासोपदेश किस ग्रन्थ में प्राप्त होता है–
(क) हर्षचरितम् (ख) दशकुमारचरितम् (ग) वासवदत्ता (घ) कादम्बरी
128. बृहत्कथा के प्रणेता हैं–
(क) वेदव्यास (ख) विष्णु शर्मा (ग) गुणाढ्य (घ) सोम
129. प चतन्त्र के लेखक हैं–
(क) वेदव्यास (ख) शिवदास (ग) नारायण (घ) विष्णुशर्मा
130. हितोपदेश के लेखक का नाम है–
(क) विष्णु शर्मा (ख) नारायण पण्डित (ग) विद्यापति (घ) राजशेखर
131. तिलकम जरी के रचयिता हैं–
(क) धनपाल (ख) राजतिलक (ग) विश्वेश्वर (घ) विष्णुशर्मा
132. इनमें से कौन शतकत्रय में सम्मिलित नहीं है–
(क) नीतिशतक (ख) वैराग्यशतक (ग) श्रृङ्गारशतक (घ)अमरूकशतक
133. नीतिशतक के रचयिता हैं–
(क) श्रीराम शर्मा (ख) भर्तृहरि (ग) विष्णुशर्मा (घ) नारायण पंडित
134. शतकत्रय के लेखक हैं–
(क) विष्णु शर्मा (ख) दण्डी (ग) भर्तृहरि (घ) व्यास
135. 'एको रसः करुण एव' किसका कथन है–
(क) भवभूति (ख) मम्मट (ग) विश्वनाथ (घ) जयदेव
136. हनुमन्नाटक के रचयिता हैं–
(क) दामोदर मिश्र (ख) शक्तिभद्र (ग) मुरारि (घ) भवभूति
137. राजशेखर द्वारा रचित रूपकों की संख्या है–
(क) 2 (ख) 4 (ग) 6 (घ) 3
138. इनमें से कौन राजशेखर द्वारा रचित है–
(क) कर्पूरमंजरी (ख) बालरामायण
(ग) बालचरित (घ) उल्लिखित तीनों
139. कुन्दमाला के प्रणेता हैं–
(क) दिङ्नाग (ख) क्षेमीश्वर (ग) जयदेव (घ) राजशेखर
140. नलचम्पू के लेखक हैं–
(क) सोमदेव (ख) त्रिविक्रमभट्ट (ग) जयदेव (घ) राजशेखर

141. गद्यपद्यमयं काव्यं की संज्ञा है–
(क) चम्पू (ख) नाटक (ग) गीतिकाव्य (घ) उपन्यास
142. रामायणचम्पू के लेखक हैं–
(क) त्रिविक्रमभट्ट (ख) भोजराज (ग) हरिश्चन्द्र (घ) क्षेमेन्द्र
143. रूपगोस्वामी की कृति है–
(क) मेघदूत (ख) पवनदूत (ग) हंसदूत (घ) इनमें से कोई नहीं
144. सुबन्धु की रचना है–
(क) स्वप्नवासवदत्तम् (ख) रत्नावली
(ग) वासवदत्ता (घ) हरविजय
145. हर्षचरित है–
(क) आख्यायिका (ख) महाकाव्य (ग) नाटक (घ) चम्पू
146. चौरप चाशिका किसकी रचना है–
(क) कल्हण (ख) सुबन्धु (ग) रूपगोस्वमी (घ) विल्हण
147. नैषधीयचरित है–
(क) उपन्यास (ख) आख्यायिका (ग) महाकाव्य (घ) खण्डकाव्य
148. जातकमाला में किस धर्म से सम्बंधित कथाएँ संगृहीत हैं–
(क) जैनधर्म (ख) बौद्धधर्म (ग) हिन्दू धर्म (घ) सिखधर्म
149. वेदाङ्गों में वेदशरीर का मुख किसे कहा गया है–
(क) छन्द (ख) निरुक्त (ग) व्याकरण (घ) कल्प
150. महाभाष्य के रचयिता हैं–
(क) पाणिनि (ख) भट्टोजिदीक्षित (ग) वरदराज (घ) पतंजलि
151. वार्त्तिककार हैं–
(क) कात्यायन (ख) पत जलि (ग) पाणिनि (घ) आनन्दभट्ट
152. भाष्य–वृत्ति–न्यास तथा प्रक्रियाग्रन्थ किस ग्रन्थ से सम्बद्ध है–
(क) अष्टाध्यायी (ख) निरुक्त (ग) ऋग्वेद (घ) ज्योतिष
153. इनमें से प्रक्रियाग्रन्थ है–
(क) महाभाष्य (ख) वार्त्तिक (ग) सिद्धान्तकौमुदी (घ) प्रौढ़मनोरमा
154. इनमें से कौन व्याकरण के त्रिमुनि में परिगणित नहीं है–
(क) पाणिनि (ख) पत जलि (ग) कात्यायन (घ) भट्टोजिदीक्षित
155. लघुसिद्धान्तकौमुदी के लेखक हैं–
(क) वरदराज (ख) भट्टोजिदीक्षित (ग) पाणिनि (घ) पत जलि
156. पाणिनि को 14–सूत्र कहाँ से प्राप्त माने जाते हैं–
(क) इन्द्र से (ख) सूर्य से (ग) अग्निकुण्ड से (घ) शिव के डमरू से
157. माहेश्वरसूत्र का प्रथम सूत्र है–
(क) अइउण् (ख) अदेङ्गुणः (ग) हलन्त्यम् (घ) हल्
158. माहेश्वर सूत्रों की संख्या है–
(क) 10 (ख) 11 (ग) 12 (घ) 14

159. 'अदर्शनं लोपः' किस प्रकार का सूत्र है–
(क) संज्ञासूत्र (ख) परिभाषासूत्र
(ग) विधिसूत्र (घ) अधिकार सूत्र
160. पाणिनि ने कितने प्रकार के सूत्र लिखे हैं–
(क) दो (ख) तीन (ग) चार (घ) छह
161. संयोगसंज्ञाविधायक सूत्र है–
(क) हलोऽनन्तराः संयोगः (ख) संयोगे गुरु
(ग) हलन्त्यम् (घ) तौ सत्
162. सवर्णसंज्ञाविधायक सूत्र है–
(क) वृद्धिरादैच् (ख) अदेङ्गुणः
(ग) तुल्यास्यप्रयत्नं सवर्णम् (घ) हलन्त्यम् सवर्णम्
163. इत्–संज्ञाविधायक सूत्र है–
(क) अनचि च (ख) संयोगे गुरु
(ग) न वेतिविभाषा (घ) उपदेशेऽजनुनासिक इत्
164. टि संज्ञा किस सूत्र से होती है–
(क) टेः (ख) अचोऽन्त्यादि (ग) तौ सत् (घ) ट्वितोऽथुच्
165. सन्धियाँ कितने प्रकार की होती हैं ?
(क) 8 (ख) 6 (ग) 3 (घ) 2
166. इनमें से किस सन्धि का संबंध व्याकरण से नहीं है–
(क) स्वर–सन्धि (ख) व्यंजन–सन्धि (ग) विसर्ग–सन्धि (घ) मुख–सन्धि
167. सन्धि का सामान्य अर्थ है–
(क) मेल (ख) समास (ग) विच्छेद (घ) विग्रह
168. 'अकः सवर्णे दीर्घः' किस सन्धि का सूत्र है–
(क) स्वर (ख) व्य जन (ग) विसर्ग (घ) मुख
169. दीर्घसंधि युक्त शब्द है–
(क) सूर्योदयः (ख) हरेन्द्रः (ग) देवालयः (घ) पवनः
170. 'विद्यालयः' में सन्धि है–
(क) स्वर (ख) व्य जन (ग) विसर्ग (घ) गुण
171. इनमें से कौन गुणसन्धियुक्त पद है–
(क) इत्यादिः (ख) महेन्द्रः (घ) श्रीशः (घ) देवालयः
172. 'गङ्गौघः' में कौन–सी सन्धि है–
(क) यण् (ख) दीर्घ (ग) गुण (घ) वृद्धि
173. इनमें से वृद्धिसन्धियुक्त शब्द है–
(क) विद्यालयः (ख) यथैव (ग) यद्यपि (घ) रमेशः
174. नदी + उदकम् का सही सन्धि रूप है
(क) नदीउदगम् (ख) नद्योदकम् (ग) नद्युदकम् (घ) नद्यूदकम्
175. शे+अनम् का सही सन्धि रूप है–
(क) शयनम् (ख) शेऽनम् (ग) शानम् (घ) शायनम्

176. कुल + अटा का सही सन्धि रूप है–
(क) कुलाटा (ख) कुल्टा (ग) कुलाट (घ) कुलटा
177. स्व + ईरः का सही सन्धि रूप है–
(क) स्वैरः (ख) सवैरः (ग) स्वेरः (घ) स्वीरः
178. प्र+एजते का सही सन्धि रूप है–
(क) प्रैजते (ख) प्रजयते (ग) प्रेजते (घ) प्रायजते
179. गो+अग्रम् का सही सन्धि रूप है–
(क) गवाग्रम् (ख) गावाग्राम् (ग) गवग्राम् (घ) गवोग्रम्
180. कृष्ण+ऋद्धिः का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) कृष्णर्द्धिः (ख) कृष्णार्द्धिः (ग) कृष्णाद्धिः (घ) कृष्णद्धिः
181. दीर्घसन्धि का सूत्र है–
(क) आद्गुण (ख) अकः सवर्णे दीर्घः
(ग) इको यणचि (घ) इनमें से कोई नहीं
182. वनौषधिः में सन्धि हुई है–
(क) दीर्घ (ख) गुण (ग) वृद्धि (घ) पूर्वरूप
183. अद्य+एव का सन्धि रूप है–
(क) अद्यएव (ख) अद्यव (ग) अद्येव (घ) अद्यैव
184. गो+इन्द्रः का सही सन्धि रूप है–
(क) गविन्द्रः (ख) गोइन्द्रः (ग) गवेन्द्रः (घ) गवीन्द्रः
185. वधू+उत्सवः का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) वधोत्सव (ख) वधूत्सव (ग) वधुत्सव (घ) वध्युत्सव
186. जश्त्वसन्धिविधायक सूत्र है–
(क) खरि च (ख) जशि च
(ग) झलां जशोऽन्ते (घ) तोर्लि
187. बालकाः + तत्र में विसर्ग के स्थान पर क्या होगा ?
(क) अवग्रह (ख) रू (ग) त् (घ) स्
188. किस सूत्र से विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है–
(क) विसर्जनीयस्य सः (ख) हशि च
(ग) रो रि (घ) लोपः शाकल्यस्य
189. विश्+नः का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) विष्णुः (ख) विश्नः (ग) विशनः (घ) विष्णुः
190. उपोषति में कौन सी सन्धि है–
(क) दीर्घ (ख) गुण (ग) पररूप (घ) वृद्धि
191. गुरोऽत्र किस सन्धि का उदाहरण है–
(क) वृद्धि (ख) गुण (ग) दीर्घ (घ) पूर्वरूप
192. कुमार्यत्र किस सन्धि का उदाहरण है–
(क) पररूप (ख) पूर्वरूप (ग) यण् (घ) दीर्घ
193. हरेऽव में सन्धि है–
(क) पूर्वरूप (ख) पररूप (ग) यण् (घ) दीर्घ

194. सच्चित् का सन्धिविच्छेद है–
(क) सति+च् (ख) सत् + चित् (ग) सच्+चित् (घ) स+च्चित्
195. रामश्चलति उदाहरण है–
(क) यण् का (ख) गुण् का (ग) विसर्ग का (घ) वृद्धि का
196. वागीशः उदाहरण है–
(क) दीर्घ (ख) वृद्धि (ग) पूर्वरूप (घ) जश्त्व
197. वृद्धिसन्धि का शुद्ध उदाहरण है–
(क) ममते (ख) ममैते (ग) ममेऽते (घ) ममएत
198. 'शिवोऽर्च्यः' का सन्धिविच्छेद है–
(क) शिवः + अर्च्यः (ख) शिवो+अर्चः
(ग) शिव + अर्च्यः (घ) शिवस् + र्चः
199. मनः + रथः का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) मनस्रथः (ख) मनरथः (ग) मनोरथः (घ) मनोस्रथः
200. दिक् + नागः की सन्धि है–
(क) दिग्नागः (ख) दिङ्नागः (ग) दिकन्नागः (घ) दिगङ्नागः
201. तत् + लीनः का सन्धि रूप है–
(क) तल्लीनः (ख) तलीनः (ग) तालीनः (घ) तद्लीनः
202. कः + अयम् का शुद्ध सन्धिरूप है–
(क) को अयम् (ख) कोऽयम् (ग) कअयम् (घ) कोरयम्
203. पुरः + करोति का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) पुरस्करोति (ख) पुरोकरोति (ग) पुरर्करोति (घ) पुरकरोति
204. एषः + विष्णुः का सही सन्धि रूप है–
(क) एषो विष्णुः (ख) एषः विष्णुः (ग) एष विष्णुः (घ) एषष्विष्णुः
205. कः + गच्छति का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) को गच्छति (ख) कर्गच्छति (ग) क गच्छति (घ) का गच्छति
206. हरि : + उवाच का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) हरि उवाच (ख) हरी उवाच (ग) हरीरूवाच (घ) हरिरुवाच
207. पर + उपकारः का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) परोपकारः (ख) परूपकारः (ग) पर्उपकारः (घ) पर उपकारः
208. हरिः + त्राता का शुद्ध सन्धि रूप है–
(क) हरि त्राता (ख) हरित्राता (ग) हरीत्राता (घ) हरिस्त्राता
209. प्रातिपदिक होता है–
(क) अर्थवान् (ख) अनर्थवान् (ग) प्रत्ययः (घ) उपसर्गः
210. 'परश्च' सूत्र है–
(क) संज्ञासूत्र (ख) अधिकारसूत्र
(ग) परिभाषासूत्र (घ) अधिकार और परिभाषासूत्र
211. बहुत्व की विवक्षा में होता है–
(क) एकवचन (ख) द्विवचन (ग) बहुवचन (घ) इनमें से कोई नहीं

212. 'पति' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप होगा–
(क) पतये (ख) पत्ये (ग) पत्याय (घ) पताय
213. 'सखि' शब्द का प्रथमा बहुवचन रूप है–
(क) सखयः (ख) सख्यः (ग) सख्याः (घ) सखायः
214. 'भूपति' शब्द का षष्ठी एकवचन रूप है–
(क) भूपत्या (ख) भूपत्युः (ग) भूपतेः (घ) भूपतयः
215. 'विश्वपा' शब्द का सप्तमी एकवचन रूप है–
(क) विश्वपायाम् (ख) विश्वपि (ग) विश्वपे (घ) विश्वपौ
216. 'नदी' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप है–
(क) नदीः (ख) नद्यः (ग) नदीम् (घ) नदीभिः
217. 'श्रिया' किस विभक्ति का रूप है–
(क) सप्तमी (ख) चतुर्थी (ग) प्रथमा (घ) तृतीया
218. 'मातुः' किस विभक्ति का रूप है–
(क)प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) प चमी (घ) चतुर्थी
219. 'वारिणी' की विभक्ति है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) प्रथमा द्वितीया
220. 'सुधी' शब्द का तृतीया एकवचन का रूप है–
(क) सुधिया (ख) सुध्या (ग) सुधिना (घ) सुधीना
221. 'गो' शब्द का षष्ठी बहुवचन रूप है–
(क) गोवाम् (ख) गोनाम् (ग) गवाम् (घ) गवानाम्
222. 'पति' शब्द का सप्तमी एकवचन का रूप है–
(क) पत्यौ (ख) पताम् (ग) पत्याम् (घ) पतो
223. 'रिपु' शब्द का षष्ठी एकवचन का रूप है–
(क) रिप्वोः (ख) रिपुस्य (ग) रिपोः (घ) रिप्वाः
224. 'पितृ' शब्द का प्रथम बहुवचन में रूप बनता है–
(क) पितरः (ख) पितारः (ग) पितृः (घ) पितराः
225. 'मातृ' शब्द का द्वितीया बहुवचन रूप है–
(क) मातृन् (ख) मातरः (ग) मातरान् (घ) मातृः
226. 'धातृ' शब्द का षष्ठी द्विवचन रूप है–
(क) धात्रयोः (ख) धातरोः (ग) धात्रोः (घ) धात्रा
227. 'वारि' शब्द का द्वितीया द्विवचन का रूप है–
(क) वारिणी (ख) वारी (ग) वारीणि (घ) वारिनि
228. 'मति' शब्द का षष्ठी बहुवचन में रूप बनता है–
(क) मतीणाम् (ख) मतीनाम् (ग) मत्याम् (घ) मतिनाम्
229. 'श्री' शब्द का प्रथम एकवचन का रूप है–
(क) श्री (ख) प्रियः (ग) श्रिः (घ) श्रीः
230. 'तत्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग षष्ठी बहुवचन में रूप बनता है–
(क) तस्याम् (ख) तेषाम् (ग) तासाम् (घ) ताषाम्

231. 'अस्मद्' शब्द से षष्ठी बहुवचन का रूप बनता है–
(क) अस्माभ्यः (ख) अस्म्भयः (ग) अस्मेभ्यः (घ) अस्मभ्यम्
232. 'युष्मद्' शब्द से षष्ठी एकवचन का रूप बनता है–
(क) तव (ख) युष्मत् (ग) त्वत् (घ) युष्मस्य
233. 'किम्' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन का रूप है–
(क) कस्मिन् (ख) कस्मै (ग) कस्याम् (घ) कस्यै
234. 'सर्व' शब्द का स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन रूप बनता है–
(क) सर्वस्मिन् (ख) सर्वस्याम् (ग) सर्वासम् (ग) सर्वाम्
235. 'त्रि' शब्द का स्त्रीलिङ्ग द्वितीया बहुवचन का रूप है–
(क) तिस्रः (ख) तिसृः (ग) त्रीन् (घ) तिसृन्
236. 'षष्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–
(क) षट्नाम (ख) षण्णाम् (ग) षटानाम् (ग) षट्णाम्
237. 'भगवत्' शब्द का षष्ठी बहुवचन का रूप है–
(क) भगवानानाम् (ख) भगवतानाम् (ग) भगवताम् (घ) भगवानाम्
238. 'राजन्' शब्द का द्वितीया बहुवचन का रूप है–
(क) राज्ञान् (ख) राजः (ग) राजानः (घ) राज्ञः
239. 'ब्रह्मन्' शब्द का चतुर्थी एकवचन में रूप है–
(क) ब्रह्मणे (ख) ब्रह्मे (ग) ब्रह्मेः (घ) ब्रह्माय
240. 'स्वभावो मूर्ध्नि तिष्ठति' यहाँ मूर्ध्नि में कौन–सी विभक्ति है–
(क) द्वितीया (ख) सप्तमी (ग) चतुर्थी (घ) प्रथमा
241. 'अस्मद्' शब्द का प चमी बहुवचन में रूप होगा–
(क) अस्मात् (ख) अस्मद्भ्यः (ग) अस्मत् (घ) अस्मदेभ्यः
242. 'तत्' शब्द का पुँल्लिङ्ग प्रथमा एकवचन में होगा–
(क) ताः (ख) ततः (ग) तत् (घ) सः
243. 'अनयोः' षष्ठी द्विवचन रूप किस शब्द का है–
(क) इदम् (ख) अदस् (ग) अस्मद् (घ) इयम्
244. 'सर्व' शब्द का पुँल्लिङ्ग प्रथम बहुवचन में रूप होगा–
(क) सर्वाः (ख) सर्वे (ग) सर्वः (घ) सर्वयः
245. 'उभ' शब्द का पुँल्लिङग द्वितीया विभक्ति में रूप होगा–
(क) उभम् (ख) उभः (ग) उभौ (घ) उभाम्
246. 'विश्ववाह्' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप होगा–
(क) विश्वौहः (ख) विश्वाहः (ग) विश्वाहाम् (घ) विश्वाहाः
247. 'निशा' शब्द का द्वितीया बहुवचन में रूप होगा–
(क) निशा (ख) निशाः (ग) निशः (घ) निशेः
248. 'कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे' सूत्र है–
(क) प्रथमा का (ख) द्वितीया का (ग) तृतीया का (घ) प चमी का
249. 'परितः' के योग में विभक्ति होती है–
(क) प चमी (ख) चतुर्थी (ग) प्रथमा (घ) द्वितीया

250. 'गम्' के योग में विभक्ति होती है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) प चमी
251. 'धिक्' के योग में किस विभक्ति का प्रयोग होता है–
(क) षष्ठी (ख) प चमी (ग) चतुर्थी (घ) द्वितीया
252. अधिकरण कारक में कौन–सी विभक्ति का प्रयोग होता है–
(क) सप्तमी (ख) प्रथमा (ग) चतुर्थी (घ) तृतीया
253. क्रिया के आधार को कौन–सा कारक कहते हैं–
(क) सम्प्रदान (ख) अधिकरण (ग) अपादान (घ) करण
254. 'सर्वतः' के योग में कौन–सी विभक्ति होती है ?
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
255. 'रूच्' अर्थ की धातु के साथ किस विभक्ति का प्रयोग होता है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
256. अङ्गविकार में कौन–सी विभक्ति होती है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) षष्ठी
257. 'सम' के योग में कौन–सी विभक्ति होती है–
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) प चमी (घ) प्रथमा
258. 'सः....खज्जः।' रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) नेत्रेण (ख) पादैः (ग) पादेन (घ) नेत्राभ्याम्
259. 'हनुमते नमः' यहाँ हनुमते किस विभक्ति का रूप है–
(क) प्रथमा (ख) द्वितीया (ग) तृतीया (घ) चतुर्थी
260. ''सहयुक्तेऽप्रधाने'' सूत्र किस विभक्ति का है–
(क) द्वितीया (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) प चमी
261. 'वषट्' के योग में विभक्ति होती है–
(क) प्रथमा (ख) तृतीया (ग) चतुर्थी (घ) प चमी
262. प चमी विभक्ति का प्रयोग है–
(क) चौरस्य (ख) चौरान् (ग) चौरेण (घ) चौरात्
263. 'गङ्गा हिमालयात् प्रभवति' यहाँ हिमालयात् में विभक्ति है–
(क) प चमी (ख) षष्ठी (ग) सप्तमी (घ) चतुर्थी
264. 'यतश्च निर्धारणम्' सूत्र है–
(क) तृतीया का (ख) सप्तमी का (ग) प चमी का (घ) चतुर्थी का
265. 'सः व्याघ्रात् बिभेति' यहाँ व्याघ्रात् में विभक्ति है–
(क) चतुर्थी (ख) प चमी (ग) षष्ठी (घ) सप्तमी
266. 'अहं रामेण सह गच्छामि' यहाँ रामेण में विभक्ति है–
(क) तृतीया (ख) द्वितीया (ग) चतुर्थी (घ) पंचमी
267. दान अर्थ में कौन–सी विभक्ति होती है–
(क) तृतीया (ख) चतुर्थी (ग) प चमी (घ) प्रथमा
268. 'हरिः.....अधितिष्ठति।' रिक्त स्थान में पद होगा
(क) वैकुण्ठम् (ख) वैकुण्ठे (ग) वैकुण्ठाय (घ) वैकुण्ठः

269. 'उपवसति अगस्त्यः.....।' रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) वनम् (ख) वने (ग) वनेन (घ) वनस्ये
270. .....प्रति दयां कुरू। रिक्त स्थान में शुद्ध पर होगा–
(क) दीनस्य (ख) दीने (ग) दीनम् (घ) दीनाय
271. वामनः .....वसुधां याचते। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) बलम् (ख) बलेः (ग) बलिः (घ) बलिम्
272. .....भारं वाहयति। रिक्त स्थान में उचित पद होगा–
(क) भृत्येन (ख) भृत्यः (ग) भृत्यम् (घ) भृत्यस्य
273. रामः .....सह वनम् अगच्छत्। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) लक्ष्मणम् (ख) लक्ष्मणेन (ग) लक्ष्मणस्य (घ) लक्ष्मणाय
274. सुरेशः .....संगणकम् अधीतवान् निपुणश्च जातः। रिक्त स्थान में पद होगा
(क) मासम् (ख) मासे (ग) मासेन (घ) मासस्य
275. पशुना.....यजते। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) रूद्रेण (ख) रूद्राय (ग) रूद्रस्य (घ) रूद्रम्
276. .....मोदकानि रोचन्ते। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) विरूपाक्षाय (ख) विरूपाक्षे (ग) विरूपाक्षम् (घ) विरूपाक्षेण
277. राधा.....स्पृहयति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा
(क) कृष्णम् (ख) कृष्णाय (ग) कृष्णेन (घ) कृष्णस्य
278. 'पाकिस्तानः.....ईर्ष्यति। रिक्त स्थान में उचित पद होगा–
(क) भारतम् (ख) भारतेन (ग) भारताय (घ) भारतस्य
279. .....सज्जनः जुगुप्सते। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) मांसाहारात् (ख) मांसाहाराय (ग) मांसाहारेण (घ) मांसाहारे
280. आतङ्कवादिनः ....निलीयन्ते। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) सैनिकेषु (ख) सैनिकानाम् (ग) सैनिकेभ्यः (घ) सैनिकैः
281. .....दक्षिणतः देवालयः अस्ति। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) नगरात् (ख) नगरस्य (ग) नगरेण (घ) नगरम्
282. कालिदासः ....कर्ता आसीत्। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) महाकाव्येषु (ख) महाकाव्यानाम्
(ग) महाकाव्यस्य (घ) महाकाव्यान्
283. रमेशः .....आस्ते। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) आसन्दिकायाम् (ख) आसन्दिकाम्
(ग) आसन्दिकासु (घ) आसन्दिकया
284. .....गजं हन्ति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) दन्तस्य (ख) दन्तयोः (ग) दन्ताभ्याम् (घ) दन्ते
285. .....अस्तङ्गते सः गतवान्। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) सूर्यम् (ख) सूर्यस्य (ग) सूर्ये (घ) सूर्याय
286. वर्षायाम् ..... व्याधयः जायन्ते। रिक्त स्थान में उचित पद होगा–
(क) अनेकानाम् (ख) अनेकाः (ग) अनेकेभ्यः (घ) अनेके

287. महेशः श्लोकस्य....करोति। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) अन्वयम् (ख) अन्वयः (ग) अन्वये (घ) अन्वस्य
288. देवालयं निकषा.....अपि वर्तते। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) महानसे (ख) महानसम् (ग) महानसः (घ) महानसा
289. कक्षायां सर्वे छात्राः मम.... सन्ति। रिक्त स्थान के लिए शुद्ध पद होगा–
(क) मित्रम् (ख) मित्राः (ग) मित्राणि (घ) मित्रः
290. .....विष्णुः श्रेष्ठः देवः अस्ति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) त्रिलोक्याम् (क) त्रिलोके (ग) त्रिलोकस्य (घ) त्रिलोकानाम्
291. द्वादशकक्षायां.....बालिकाः अपि पठन्ति। शुद्ध पद का चयन करें
(क) चत्वारः (ख) चतस्रः (ग) चत्वारि (घ) चतुर्थः
292. भारते राष्ट्रपतेः.....न अस्ति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) अधिपताः (ख) अधिपत्यः (ग) आधिपत्यम् (घ) आधिपत्याः
293. सुरेशः .... औषधीं सेवते। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) कीदृशः (ख) कीदृशम् (ग) कीदृशी (घ) कीदृशीम्
294. वर्षाकाले प्रायः भारते सर्वत्र.....भवन्ति। शुद्ध पद का चयन करें–
(क) वर्षाः (ख) वर्षे (ग) वर्षासु (घ) वर्षा
295. रामस्य.....विस्तर्णम् आसीत्। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) मस्तकः (ख) मस्तकम् (ग) मस्तके (घ) मस्तकेन
296. पूजायाम्....एव प्रयोगः भवति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) अक्षतः (ख) अक्षताम् (ग) अक्षतानाम् (घ) अक्षतस्य
297. .....कालिदासः श्रेष्ठः। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) कविः (ख) कव्येः (ग) कवीनाम् (घ) कवये
298. ग्रीष्मे.....सर्वेभ्यः रोचते। रिक्त स्थान में पद होगा–
(क) नीरः (ख) नीराः (ग) नीरम् (घ) नीराणि
299. .....पुरः पश्यसि देवदारुम्। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) अमुम् (ख) असौ (ग) अमूः (घ) अस्य
300. वर्षे.....मासाः भवन्ति। रिक्त स्थान में शुद्ध पद होगा–
(क) द्वादशः (ख) द्वादश (ग) द्वादशाः (घ) द्वादशानि

♣♣♣♣♣